Vol.: 17 (January–June 2020)

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

# आम्नायिकी

सप्तदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, २०२०
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वारा अनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० सरोजकुमारपाढी,
डॉ० पुष्पादीक्षितः, डॉ० रमाकान्तपाण्डेयः, प्रो० (डॉ.) देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
**वेदविभागः**
**संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः**
**काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी- २२१००५**

१२. वैदिक ऋषियों की मनीषा -ओषधिविज्ञान के आलोक में ५९-६३
**डॉ0 अनीता सेनगुप्ता**

१३. लग्न साधन ६४-६८
**मनोरमा कुमारी**

१४. गुप्तकालीन प्रशासन में लोकतांत्रिक तत्व ६९-७५
**डॉ0 सीमा मिश्रा**

१५. कश्मीर शैवदर्शन में सदाशिव तत्त्व और ईश्वर तत्व का विवेचन ७६-८३
**डॉ0 वाहिद नसरू**

१६. अनामिका : स्त्री अस्मिता का स्वर ८४-९०
**डॉ0 गौरी त्रिपाठी**

१७. बाल साहित्य के सरोकार ९१-९९
**आरती पाल**

१८. शब्दशक्तिविवेचनम् १००-१०६
**मुरारी कुमार मिश्रः**

१९. समासे व्यपेक्षाविमर्शः १०७-११०
**डॉ० प्रभाकर मिश्रः**

२०. COSMO-METAPHYSICAL CONSIDERATIONS IN ĀYURVEDA १११-११८
**Dr. Dnyaneshwar J. Deshatwar**

# अनामिका - स्त्री अस्मिता का स्वर

डॉ. गौरी त्रिपाठी*

अनामिका स्त्री मुक्ति की सशक्त आवाज हैं लेकिन मूलतः वे एक कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं। स्त्री जीवन की तमाम व्यथा, हर्ष, शोक, चिंता, स्त्री प्रश्न और चुनौतियां एक साथ उनके यहां दिखाई पड़ती हैं। उनकी कविताएं एक साथ कोमल संवेदनाएं और दूसरी तरफ गहरी समझ को भी प्रदर्शित करती हैं।

अनामिका की कविता दरअसल स्त्री अस्मिता और उसके संघर्ष की पड़ताल है, पितृसत्तात्मक समाज के बीच स्त्री कैसे जीती है इसको धीरे-धीरे अनामिका की कविताएं खोलती हैं। स्त्री के प्रति समाज के नजरिए को दिखाती है इनकी कविता।

अनामिका की कविताओं में वह स्त्री आती है जो पढ़ी लिखी एवं अपने और अपने कर्तव्य के प्रति काफी सचेत है। वे चाहती हैं कि स्त्रियां खुद निर्णय लें और साथ ही साथ अपने स्त्री स्वाभाविकता को नजरअंदाज भी ना करें। अनामिका की कविताएं वाकई स्त्री मन की कविताएं हैं जिसे बार-बार पढ़ने का मन करता है -

**'पढ़ा गया हमको
जैसे पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का
चना जोर गरम के लिफाफे बनाने के पहले!'**[1]

इनकी कविताएं किसी के सामने झुकना नहीं सिखाती हैं बल्कि गौरव के साथ जीना सिखाती हैं -

**'हम भी इंसान हैं-
हमें कायदे से पढ़ो एक -एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बीए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन!'**[2]

जीवन की सच्चाई को उजागर करती हैं ये कविताएं, स्त्री की पहचान कराती हैं। वे स्त्री मन की गहरी पीड़ा और संवेदनाओं को काफी महत्व देती हैं। वे चाहती हैं कि स्त्रियां चली आ रही परंपरागत छवियों से बाहर निकलें। सीता और सावित्री के आदर्श को बेवजह ढोने की जरूरत नहीं है। उनकी कविताओं की स्त्रियों के भीतर असीम संभावनाएं और आत्मविश्वास छिपा हुआ होता है। उनकी कविता

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़।